॥श्रीहरिः॥

LEARN GEETA
तस्मात् योगी भवार्जुन

Ver 7.0
सप्तम संस्करण

॥ विद्या शर्मेण शोभते ॥
गीता परिवार
॥ गीता पढ़ें, पढ़ायें, जीवन में लायें ॥

गीता परिवार द्वारा श्रीमद्भगवद्गीता का शुद्ध उच्चारण सीखने हेतु अनुस्वार, विसर्ग एवं आघात प्रयोग सहित, चरणानुसार विभाग, मूल संहिता पाठ के अनुकूल

श्रीमद्भगवद्गीता

त्रयोदश (13वाँ) अध्याय

क्षेत्रक्षेत्रज्ञविभागयोग

- लर्नगीता एप्प : app.learngeeta.com
- नया पंजीकरण : Joingeeta.com
- अभ्यास सामग्री : practice.learngeeta.com
- विवेचन सुनें : vivechan.learngeeta.com
- परीक्षा पंजीकरण : exam.learngeeta.com
- YouTube : youtube.com/c/GeetaPariwar
- Instagram : instagram.com/geetaparivar
- साधक पोर्टल : online.learngeeta.com
- पुस्तक क्रय : store.learngeeta.com
- प्रचार सामग्री : learngeeta.com/pracharak
- गीतासेवी बनें : sewa.learngeeta.com
- गीता कक्षा उपहार : gift.learngeeta.com
- Facebook : facebook.com/geetaparivar
- Twitter : x.com/Learn_Geeta

वसुदेवसुतं(न्) देवं(ङ्), कंसचाणूरमर्दनम्।
देवकीपरमानन्दं(ङ्), कृष्णं(वँ) वन्दे जगद्गुरुम्॥

ॐ

Ver 7.0
सप्तम संस्करण

श्रीपरमात्मने नमः

श्रीमद्भगवद्गीता

अथ त्रयोदशोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

इदं(म्) शरीरं(ङ्) कौन्तेय, क्षेत्रमित्यभिधीयते।
एतद्यो वेत्ति तं(म्) प्राहुः, क्षेत्रज्ञ इति तद्विदः॥1॥

क्षेत्रज्ञं(ञ्) चापि मां(वँ) विद्धि, सर्वक्षेत्रेषु भारत।
क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोर्ज्ञानं(यँ), यत्तज्ज्ञानं(म्) मतं(म्) मम॥2॥

तत्क्षेत्रं(यँ) यच्च यादृक्च, यद्विकारि यतश्च यत्।
स च यो यत्प्रभावश्च, तत्समासेन मे शृणु॥3॥

ऋषिभिर्बहुधा गीतं(ञ्), छन्दोभिर्विविधैः(फ्) पृथक्।
ब्रह्मसूत्रपदैश्चैव, हेतुमद्भिर्विनिश्चितैः॥4॥

महाभूतान्यहङ्कारो, बुद्धिरव्यक्तमेव च।
इन्द्रियाणि दशैकं(ञ्) च, पञ्च चेन्द्रियगोचराः॥5॥

इच्छा द्वेषः(स्) सुखं(न्) दुःखं(म्), सङ्घातश्चेतना धृतिः।
एतत्क्षेत्रं(म्) समासेन, सविकारमुदाहृतम्॥6॥

अमानित्वमदम्भित्वम्, अहिंसा क्षान्तिरार्जवम्।
आचार्योपासनं(म्) शौचं(म्), स्थैर्यमात्मविनिग्रहः॥7॥

इन्द्रियार्थेषु वैराग्यम्, अनहङ्कार एव च।
जन्ममृत्युजराव्याधि, दुःखदोषानुदर्शनम्॥8॥

Learngeeta.com
LEARN GEETA

असक्तिरनभिष्वङ्गः(फ्), पुत्रदारगृहादिषु।
नित्यं(ञ्) च समचित्तत्वम्, इष्टानिष्टोपपत्तिषु॥9॥

मयि चानन्ययोगेन, भक्तिरव्यभिचारिणी।
विविक्तदेशसेवित्वम्, अरतिर्जनसंसदि॥10॥

अध्यात्मज्ञाननित्यत्वं(न्), तत्त्वज्ञानार्थदर्शनम्।
एतज्ज्ञानमिति प्रोक्तम्, अज्ञानं(यँ) यदतोऽन्यथा॥11॥

ज्ञेयं(यँ) यत्तत्प्रवक्ष्यामि, यज्ज्ञात्वामृतमश्नुते।
अनादिमत्परं(म्) ब्रह्म, न सत्तन्नासदुच्यते॥12॥

सर्वतः(फ्) पाणिपादं(न्) तत्, सर्वतोऽक्षिशिरोमुखम्।
सर्वतः(श्) श्रुतिमल्लोके, सर्वमावृत्य तिष्ठति॥13॥

सर्वेन्द्रियगुणाभासं(म्), सर्वेन्द्रियविवर्जितम्।
असक्तं(म्) सर्वभृच्चैव, निर्गुणं(ङ्) गुणभोक्तृ च॥14॥

बहिरन्तश्च भूतानाम्, अचरं(ञ्) चरमेव च।
सूक्ष्मत्वात्तदविज्ञेयं(न्), दूरस्थं(ञ्) चान्तिके च तत्॥15॥

अविभक्तं(ञ्) च भूतेषु, विभक्तमिव च स्थितम्।
भूतभर्तृ च तज्ज्ञेयं(ङ्), ग्रसिष्णु प्रभविष्णु च॥16॥

ज्योतिषामपि तज्ज्योतिः(स्), तमसः(फ्) परमुच्यते।
ज्ञानं(ञ्) ज्ञेयं(ञ्) ज्ञानगम्यं(म्), हृदि सर्वस्य विष्ठितम्॥17॥

इति क्षेत्रं(न्) तथा ज्ञानं(ञ्), ज्ञेयं(ञ्) चोक्तं(म्) समासतः।
मद्भक्त एतद्विज्ञाय, मद्भावायोपपद्यते ॥18॥

Learngeeta.com

LEARN GEETA

प्रकृतिं(म्) पुरुषं(ञ्) चैव, विद्ध्यनादी उभावपि।
विकारांश्च गुणांश्चैव, विद्धि प्रकृतिसम्भवान्॥19॥

कार्यकरणकर्तृत्वे, हेतुः(फ्) प्रकृतिरुच्यते।
पुरुषः(स्) सुखदुःखानां(म्), भोक्तृत्वे हेतुरुच्यते॥20॥

पुरुषः(फ्) प्रकृतिस्थो हि, भुङ्क्ते प्रकृतिजान्गुणान्।
कारणं(ङ्) गुणसङ्गोऽस्य, सदसद्योनिजन्मसु॥21॥

उपद्रष्टानुमन्ता च, भर्ता भोक्ता महेश्वरः।
परमात्मेति चाप्युक्तो, देहेऽस्मिन्पुरुषः(फ्) परः॥22॥

य एवं(वँ) वेत्ति पुरुषं(म्), प्रकृतिं(ञ्) च गुणैः(स्) सह।
सर्वथा वर्तमानोऽपि, न स भूयोऽभिजायते॥23॥

ध्यानेनात्मनि पश्यन्ति, केचिदात्मानमात्मना।
अन्ये साङ्ख्येन योगेन, कर्मयोगेन चापरे॥24॥

अन्ये त्वेवमजानन्तः(श्), श्रुत्वान्येभ्य उपासते।
तेऽपि चातितरन्त्येव, मृत्युं(म्) श्रुतिपरायणाः॥25॥

यावत्सञ्जायते किञ्चित्, सत्त्वं(म्) स्थावरजङ्गमम्।
क्षेत्रक्षेत्रज्ञसंयोगात्, तद्विद्धि भरतर्षभ॥26॥

समं(म्) सर्वेषु भूतेषु, तिष्ठन्तं(म्) परमेश्वरम्।
विनश्यत्स्वविनश्यन्तं(यँ), यः(फ्) पश्यति स पश्यति॥27॥

समं(म्) पश्यन्हि सर्वत्र, समवस्थितमीश्वरम्।
न हिनस्त्यात्मनात्मानं(न्), ततो याति परां(ङ्) गतिम्॥28॥

Learngeeta.com

LEARN GEETA

प्रकृत्यैव च कर्माणि, क्रियमाणानि सर्वशः।
यः(फ्) पश्यति तथात्मानम्, अकर्तारं(म्) स पश्यति॥29॥

यदा भूतपृथग्भावम्, एकस्थमनुपश्यति।
तत एव च विस्तारं(म्), ब्रह्म सम्पद्यते तदा॥30॥

अनादित्वान्निर्गुणत्वात्, परमात्मायमव्ययः।
शरीरस्थोऽपि कौन्तेय, न करोति न लिप्यते॥31॥

यथा सर्वगतं(म्) सौक्ष्म्याद्, आकाशं(न्) नोपलिप्यते।
सर्वत्रावस्थितो देहे, तथात्मा नोपलिप्यते॥32॥

यथा प्रकाशयत्येकः(ख्), कृत्स्नं(लँ) लोकमिमं(म्) रविः।
क्षेत्रं(ङ्) क्षेत्री तथा कृत्स्नं(म्), प्रकाशयति भारत॥33॥

क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोरेवम्, अन्तरं(ञ्) ज्ञानचक्षुषा।
भूतप्रकृतिमोक्षं(ञ्) च, ये विदुर्यान्ति ते परम्॥34॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासु उपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां(यँ) योगशास्त्रे
श्रीकृष्णार्जुनसंवादे क्षेत्रक्षेत्रज्ञविभागयोगो नाम त्रयोदशोऽध्यायः॥

॥ॐ श्रीकृष्णार्पणमस्तु॥

Learngeeta.com

LEARN GEETA

स्तर 4 उच्चारण नियमावली

Ver 7.0
सप्तम संस्करण

माहेश्वर सूत्र

माहेश्वर सूत्रों की उत्पत्ति भगवान नटराज (शिव) के द्वारा किये गये ताण्डव नृत्य से मानी गयी है। डमरु के चौदह बार बजाने से चौदह सूत्रों के रूप में ध्वनियाँ निकली, इन्हीं ध्वनियों से व्याकरण का प्राकट्य हुआ।

1. अइउण् 2. ऋलृक् 3. एओङ् 4. ऐऔच् 5. हयवरट् 6. लण् 7. ञमङणनम् 8. झभञ् 9. घढधष्

10. जबगडदश् 11. खफछठथचटतव् 12. कपय् 13. शषसर् 14. हल्

शब्दावली

- **'प्रत्याहार'** - प्रत्याहार का अर्थ होता है – संक्षिप्त कथन। माहेश्वर सूत्रों के आदि और अन्तिम वर्ण को मिलाकर प्रत्याहार बनता है। उदा. = 'अच्' प्रत्याहार - 'अच्' से 'अ, इ, उ, ऋ, ऌ, ए, ऐ, ओ, औ' इन वर्णों का ग्रहण होगा।
- **लोप** – दो वर्णों की संधि के दौरान किसी वर्ण को हटा देने की प्रक्रिया को लोप कहते हैं।
- **प्रकृतिभाव** – संधि के समय आदेश, आगम या लोप की स्थिति नहीं हो, पदों की पूर्ववत स्थिति रहना।
- **प्रत्यय** – जिन वर्ण या वर्ण समुदायों का स्वतंत्र अस्तित्व नहीं होता वे किसी शब्द के पश्चात् लगकर उसके अर्थ में परिवर्तन कर देते हैं। प्रत्यय पांच प्रकार के होते हैं – सुप्, तिङ्, कृत्, तद्धित, स्त्री प्रत्यय।
- **उपसर्ग** – ऐसे शब्द जो किसी धातु के पूर्व जुड़ कर उसके अर्थ में परिवर्तन कर देते हैं या उसी अर्थ की पुष्टि करते हैं। उदा. – हार शब्द में विभिन्न उपसर्ग जुड़कर अनेक अलग-अलग अर्थ के शब्दों की सिद्धि करते हैं – 1. प्रहार, 2. संहार(विनाश), 3. विहार(घूमना)। संस्कृत में कुल 22 उपसर्ग हैं - प्र, परा, अप, सम्, अनु, अव, निस्, निर्, दुस्, दुर्, वि, आङ्, नि, अधि, अपि, अति, सु, उत्, अभि, प्रति, परि, उप।

॥ द्वित्व(आघात) नियम॥

मूल द्वित्व नियम - अनचि च, स्वरात् संयोगादिर्द्विरुच्यते सर्वत्र।

स्वर के बाद संयुक्त वर्ण आने पर संयुक्त वर्ण में प्रथम वर्ण का द्वित्व पाणिनीय व्याकरण के 'अनचि च' सूत्र से एवं पाणिनीयशिक्षा के 'स्वरात् संयोगादिर्द्विरुच्यते सर्वत्र' सूत्र से होता है। यह उत्सर्ग नियम हैं जो अपवाद छोड़कर सभी स्थानों पर प्रयुक्त हो जाता है।

इस नियम के कुछ अपवाद नियम हैं जिनके सूत्र इस प्रकार हैं।

1. परं तु रेफहकाराभ्याम्। *- पाणिनीयशिक्षा*

संयुक्त वर्ण में यदि प्रथम वर्ण रेफ अथवा हकार है तो द्वित्व नहीं होता है। उदा. – पर्युपासते, गुह्यतमम्

2. (न) सवर्णे। *-प्रातिशाख्य*

यदि संयुक्त वर्ण में दोनों वर्ण समान हैं तब वहाँ स्वाभाविक रूप से ही द्वित्व होता है इसीलिये वहाँ अतिरिक्त द्वित्व की आवश्यकता नहीं होती। उदा. – उत्सन्न, मय्यावेश्य

3. त्रिप्रभृतिषु शाकटायनस्य *-पाणिनीयशिक्षा*

जब संयुक्त वर्ण में तीन व्यञ्जनों का संयोग हो। उदा. – कृत्स्नम्, भक्त्या

4. प्रथमैर्द्वितीयास्तृतीयैश्चतुर्थाः। *- पाणिनीयशिक्षा*

संयुक्त वर्ण में पांचो वर्ग के सभी वर्णों(स्पर्श वर्णों) का द्वित्व करने में द्वितीय वर्ण से पहले प्रथम वर्ण का और चतुर्थ वर्ण से पहले तृतीय वर्ण का प्रयोग किया जाता है। उदा. – जिघ्रन् = जि(ग्)घ्रन्)

योगेशं(म्) सच्चिदानन्दं(वँ), वासुदेवं(वँ) व्रजप्रियम्।
धर्मसंस्थापकं(वँ) वीरं(ङ्), कृष्णं(वँ) वन्दे जगद्गुरुम्॥

Learngeeta.com

LEARN GEETA

© GEETA PARIWAR
गीता परिवार के साहित्य को किसी भी प्रकार से अन्य संस्था अथवा अन्य स्थान पर उपयोग/प्रकाशित करने से पूर्व अनुमति लेना आवश्यक है। अनुमति लेने हेतु पूर्ण प्रयोजन के साथ हमें consent@learngeeta.com पर ईमेल करें।